कवर पेज सहित
36 पृष्ठ

मूल्य 5.00 रूपये
फरवरी, 2015

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

पर्यावरण की रक्षा जीवन की सुरक्षा

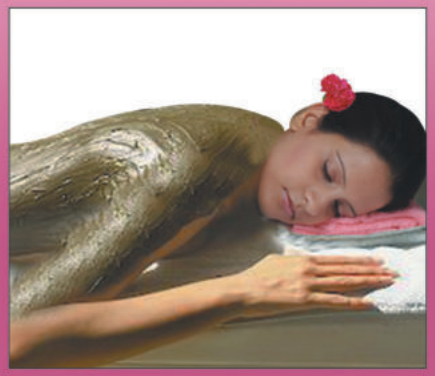

P. R. No.: DL(S)-17/3082/2012-14
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473
Date of Post : 27-28

SEVA-DHAM Plus
Since 1994
............The Wellness Center
(YOGA, AYURVEDA, NATUROPATHY & PHYSIOTHERAPY)
Relax Your Body, Mind & Soul In A Spiritual Environment
Truly rejuvenating treatment packages through
Relaxing Traditional Kerala Ayurvedic Therapies

KH-57, Ring Road, (Behind Indian Oil Petrol Pump), Sarai Kale Khan, New Delhi - 110013
Ph. : +91-11-2632 0000, +91-11-2632 7911 Fax : +91-11-26821348 Mob. : +91-9868 99 0088, +91-9999 60 9878
Website : www.sevadham.info E-mail : contact@sevadham.info

प्रकाशक व मुद्रक : श्री अरुण तिवारी, मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.)
के.एच.–57 जैन आश्रम, रिंग रोड़, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे, पो. बो.–3240, नई दिल्ली–110013, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1 से मुद्रित।
संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

वर्ष : 15 अंक : 2 फरवरी, 2015

: मार्गदर्शन :
पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

: संयोजना :
साध्वी वसुमती
साध्वी पद्मश्री

: परामर्शक :
श्रीमती मंजुबाई जैन

: सम्पादक :
श्रीमती निर्मला पुगलिया

: व्यवस्थापक :
श्री अरूण तिवारी

वार्षिक शुल्क : 60 रुपये
आजीवन शुल्क : 1100 रुपये

: प्रकाशक :
मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने, नई दिल्ली - 110013
फोन नं.: 26315530, 26821348
Website: www.rooprekha.com
E-mail: contact@manavmandir.info

इस अंक में

01. आर्ष-वाणी - 5
02. बोध-कथा - 5
03. शाश्वत स्वर - 6
04. उद्‌बोधन - 7
05. चिंतन-चिरंतन - 12
06. गजल - 14
07. विचार-दृष्टि - 15
08. विचार-मंथन - 16
09. बसंत पंचमी... - 20
10. कर्त्तव्य की रक्षा - 21
11. उपनिषद कथा - 22
12. वेताल पच्चीसी - 24
13. चुटकुले - 25
14. संत की परीक्षा - 26
15. स्वास्थ्य - 27
16. बोलें-तारे - 29
17. समाचार-दर्शन - 31
18. स्मृति-संबल - 32
19. झलकियां - 33

रूपरेखा-संरक्षक गण

श्री वीरेन्द्र भाई भारती बेन कोठारी, ह्युष्टन, अमेरिका
डॉ. प्रवीण नीरज जैन, सेन् फ्रेंसिस्को
डॉ. अंजना आशुतोष रस्तोगी, टेक्सास
डॉ. कैलाश सुनीता सिंघवी, न्यूयार्क
श्री शैलेश उर्वशी पटेल, सिनसिनाटी
श्री प्रमोद वीणा जवेरी, सिनसिनाटी
श्री महेन्द्र सिंह सुनील कुमार डागा, बैंकाक
श्री सुरेश सुरेखा आबड़, शिकागो
श्री नरसिंहदास विजय कुमार बंसल, लुधियाना
श्री कालू राम जतन लाल बरड़िया, सरदार शहर
श्री अमरनाथ शकुन्तला देवी, अहमदगढ़ वाले, बरेली
श्री कालूराम गुलाब चन्द बरड़िया, सूरत
श्री जयचन्द लाल चंपालाल सिंघी, सरदार शहर
श्री भंवरलाल उम्मेद सिंह शैलेन्द्र सुराना, दिल्ली
श्रीमती कमला बाई धर्मपत्नी स्व. श्री मांगेराम अग्रवाल, दिल्ली
श्री प्रेमचन्द ओमप्रकाश जैन उत्तमनगर, दिल्ली
श्रीमती मंगली देवी बुच्चा धर्मपत्नी स्व. शुभकरण बुच्चा, सूरत
श्री पी.के. जैन, लॉर्ड महावीरा स्कूल, नोएडा
श्री द्वारका प्रसाद पतराम, राजली वाले, हिसार
श्री हरबंसलाल ललित मोहन मित्तल, मोगा, पंजाब
श्री पुरुषोत्तमदास बाबा गोयल, सुनाम, पंजाब
श्री विनोद कुमार सुपुत्र श्री बीरबल दास सिंगला,
श्री अशोक कुमार सुनीता चोरड़िया, जयपुर
श्री सुरेश कुमार विनय कुमार अग्रवाल, चंडीगढ़
श्री देवकिशन मून्दडा विराटनगर नेपाल
श्री दिनेश नवीन बंसल सुपुत्र
श्री सीता राम बंसल (सीसवालिया) पंचकूला
श्री हरीश अलका सिंगला लुधियाना पंजाब
श्री केवल आशा जैन, टेम्पल, टेक्सास
श्री चैनरूप सुशील कुमार पारख, हनुमानगढ़
श्री श्यामलाल वीणादेवी सातरोदिया, हिसार

श्री उदयचन्द राजीव डागा, ह्युष्टन
श्री हेमेन्द्र, दक्षा पटेल न्यूजर्सी
श्री प्रवीण लता मेहत्ता ह्युष्टन
श्री अमृत किरण नाहटा, कनाडा
श्री राधेश्याम सावित्री देवी हिसार
श्री मनसुख भाई तारावेन मेहता, राजकोट
श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाश बंसल, मुक्सर
डॉ. एस. आर. कांकरिया, मुम्बई
श्री कमलसिंह-विमलसिंह बैद, लाडनूं
श्रीमती स्वराज एरन, सुनाम
श्रीमती चंपाबाई भंसाली, जोधपुर
श्रीमती कमलेश रानी गोयल, फरीदाबाद
श्री जगजोत प्रसाद जैन कागजी, दिल्ली
डॉ. एस.पी. जैन अलका जैन, नोएडा
श्री राजकुमार कांतारानी गर्ग, अहमदगढ़
श्री प्रेम चंद जिया लाल जैन, उत्तमनगर
श्री देवराज सरोजबाला, हिसार
श्री राजेन्द्र कुमार केडिया, हिसार
श्री धर्मचन्द रवीन्द्र जैन, फतेहाबाद
श्री रमेश उषा जैन, नोएडा
श्री दयाचंद शशि जैन, नोएडा
श्री प्रेमचन्द रामनिवास जैन, मुआने वाले
श्री संपतराय दसानी, कोलकाता
लाला लाजपत राय, जिन्दल, संगरूर
श्री आदीश कुमार जी जैन, दिल्ली
मास्टर श्री बैजनाथ हरीप्रकाश जैन, हिसार
श्री केवल कृष्ण बंसल, पंचकूला
श्री सुरनेश कुमार सिंगला, सुनाम, पंजाब
श्री बुधमल राजकरण, तेजकरण सिंघी, सरदार शहर
श्रीमती लक्ष्मीदेवी चिंडालिया, सरदार शहर
श्री प्रहलाद राय विनोद कुमार सातरोड़िया

आर्ष-वाणी

अत्थितं अत्थितं परिणमई,
णत्थितं णत्थितं परिणमई।

सत् कभी असत् नहीं होता, असत् कभी सत् नहीं होता।

बोध-कथा

सबसे बड़ी तपस्या

सत्यनगर का राजा सत्यप्रताप सिंह अत्यंत न्यायप्रिय शासक था। एक बार उसे पता चला कि सौम्यदेव नामक एक ऋषि अनेक वर्षों से लोहे का एक डंडा जमीन में गाड़कर तपस्या कर रहे हैं। उनके तप के प्रभाव से डंडे में कुछ अंकुर फूट कर फूल-पत्ते निकल रहे हैं। जब वह अपनी तपस्या में पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेंगे तो उनका डंडा फूल-पत्तों से भर जाएगा। सत्यप्रताप ने सोचा कि यदि उनके तप में इतना बल है कि लोहे के डंडे में अंकुर फूट कर फूल-पत्ते निकल सकते हैं तो फिर मैं भी क्यों न तप करके अपना जीवन सार्थक बनाऊं। यह सोच कर वह भी ऋषि के समीप लोहे का डंडा गाड़कर तपस्या करने लगा। संयोगवश उसी रात जोर का तूफान आया। मूसलाधार बारिश होने लगी। राजा और ऋषि दोनों ही मौसम की परवाह न कर तपस्या में मगन रहे। कुछ देर बाद एक व्यक्ति बुरी तरह भीगा हुआ ठंड से कांपता आया। उसने ऋषि से कहीं ठहरने की जगह के बारे में पूछा पर ऋषि ने आंख खोलकर भी नहीं देखा। निराश होकर वह राजा सत्यप्रताप के पास पहुंचा और गिर पड़ा। राजा ने उसकी इतनी बुरी हालत देखकर उसे गोद में उठाया। उसे नजदीक ही एक कुटिया नजर आई। उसने उसे व्यक्ति को कुटिया में लिटाया और उसके समीप आग जलाकर गर्माहट पैदा की। गर्माहट मिलने से व्यक्ति होश में आ गया। इसके बाद राजा ने उसे कुछ जड़ी-बूटी पीसकर पिलाई। कुछ ही देर बाद वह व्यक्ति बिल्कुल ठीक हो गया। सुबह होने पर राजा जब उस व्यक्ति के साथ कुटिया से बाहर आया तो यह देखकर हैरान रह गया कि जो लोहे का डंडा उसने गाड़ा था वह ताजे फूल-पत्तों से भरकर झुक गया था। इसके बाद राजा ने ऋषि के डडे की ओर देखा। ऋषि के थोड़े बहुत निकले फूल-पत्ते भी मुरझा गए थे। राजा समझ गया कि मानव सेवा से बड़ी तपस्या कोई और नहीं है। वह अपने राज्य वापस आकर प्रजा की समुचित देखभाल करने लगा।

शाश्वत स्वर

ज्ञान, कर्म और भक्ति

प्राचीनकाल से लोग कहते आए हैं कि परमपुरुष को पाने का रास्ता त्रिविध है- ज्ञान, कर्म और भक्ति। लोग कहते हैं कि ज्ञान से लोग समझ लेते हैं कि परमात्मा क्या है, वे स्वयं क्या हैं और परमात्मा को पाना क्या है?

यह विचारणीय है कि ज्ञान से कोई मनुष्य कैसे समझेगा कि परमात्मा क्या है? मनुष्य का ब्रेन (मस्तिष्क) तो छोटा सा है, वह कैसे समझेगा कि परमपुरुष किस तरह के हैं? इसलिए ज्ञान के माध्यम से परमात्मा का समझ लेने का दावा सही नहीं हो सकता।

थोड़ा रोग होने से बुद्धि चली जाती है, बुढ़ापे में बुद्धि चली जाती है। एक बाईस साल का युवा जितना याद रख सकता है, उतना अस्सी साल का बूढ़ा आदमी याद नहीं रख सकता। फिर यह भी कहते हें कि ज्ञान से यह समझ लेंगे कि वह (मनुष्य) क्या है।

मनुष्य यह नहीं जानता है कि वह कौन है। आज से दो सौ साल पहले तुम लोग कौन थे, और फिर दो सौ साल बाद वहां रहोगे, यह भी नहीं जानते। इसलिए यह कहना भी सही नहीं है कि ज्ञान से आगे के बारे में, भविष्य के बारे में जाना जा सकता है। हां, ज्ञान से कुछ हद तक मन की तृप्ति हो जाती है, कुछ हद तक वह दूसरों को समझा सकता है, मगर इससे अधिक कुछ नहीं।

मैं यह नहीं कहूंगा कि ज्ञान की चर्चा नहीं करो। जब तक ज्ञान की भूख है तब तक ज्ञानार्जन करते रहो। जब महसूस करो कि इसके आगे ज्ञान से कुछ होने वाला नहीं है, तब उसे छोड़ना। इसके पहले ज्ञान की राह छोड़ने की आवश्यकता नहीं।

फिर, कुछ लोग कहते हैं कि कर्म के द्वारा परमपुरुष के पास जाना भी कर्म ही है। कर्म के बिना तो मनुष्य एक पल भी रह नहीं सकते हैं। सांस लेने की क्रिया भी कर्म है। कर्म करना चाहिए, किंतु वह सही कर्म होना चाहिए।

भक्ति के विषय के ज्ञानी जन मानते हैं कि मोक्ष के लिए भक्ति का मार्ग श्रेष्ठ है। वे यह नहीं कहते कि भक्ति एकमात्र रास्ता है, क्योंकि अगर वे यह मान लें कि भक्ति एकमात्र रास्ता है तो उनके ज्ञान की कोई कीमत ही नहीं रहेगी। अतः वे अपने ज्ञान की कीमत बचाने के लिए कहते हैं कि भक्ति श्रेष्ठ है। लेकिन मैं तो कहूंगा कि भक्ति ही एकमात्र रास्ता है परमपुरुष को पाने का। भक्ति जग गई तो पूरा काम हो गया। भक्ति को जगाने के लिए मनुष्य ज्ञान की चर्चा करें, कर्म की चर्चा करें।

जब तक पूरे तौर से भक्ति जगती नहीं है, तब तक ज्ञान और कर्म की जरूरत है- तब तक मनुष्य ज्ञान, कर्म की चर्चा करते रहें।

अतः भक्ति ही एकमात्र रास्ता है। और जब तक सच्ची भक्ति नहीं होती, तब तक ज्ञान की चर्चा करते रहो, कर्म की चर्चा करते रहो, और हमेशा याद रखो की यह ज्ञान चर्चा, कर्मचर्चा भक्ति को जगाने के लिए है।

-निर्मला पुगलिया

हाथों की शोभा दान है कंगन नहीं

-आचार्य रूपचन्द्र

भगवान महावीर के जीवन का अद्‌भुत प्रसंग है। अमृत देशना के पश्चात् महावीर कुछ जिज्ञासु लोगों के बीच बिराजमान हैं। उन लोगों में मगध-सम्राट बिम्बसार भी हैं, महामात्य अभयकुमार भी और कालक कसाई भी। तभी एक व्यक्ति हाल में प्रवेश करता है, जिसके पूरे शरीर से जैसे कोढ झर रहा हो। वह भगवान के चरणों से अपना ललाट बार-बार रगड़ता है जैसे कोई लेप लगा रहा हो। भगवान शांत विराजमान हैं। सम्राट बिम्बसार उसकी अशिष्टता से उत्तेजित हो जाते हैं। किंतु भगवान के मौन इशारे से मन मसोस कर रह जाते हैं।

तभी महावीर को जोर से छींक आती है। वह व्यक्ति जोर से बोल उठता है- जितना जल्दी संभव हो, मृत्यु का वरण कर। इतने में बिम्बसार को छींक आ जाती है। वह व्यक्ति बोल उठता है- जितना लंबा जीवन जी सकता है, उतना जी ले। कहा जाता है छींक/खांसी संक्रामक होती है। एक को आ जाए तो पड़ोसी भी अछूता नहीं रहता है। अब अभयकुमार को भी छींक आ गई। वह व्यक्ति बोल उठा- चाहे जी, चाहे मर। तभी कालक कसाई ने भी जोर से छींक ली। वह व्यक्ति फिर बोल उठा- न तो नू जी, न तू मर। उसके इस अनर्गल प्रलाप से सम्राट बिम्बसार के धीरज का बांध टूट जाता है। वह अपने अंग-रक्षकों से कहता है- यह व्यक्ति जैसे ही बाहर जाए, बंदी बना लिया जाए।

कुछ समय पश्चात् वह व्यक्ति कमरे से बाहर निकला, राजपुरुषों ने उसे बंदी बनाना चाहा। किंतु देखते-देखते वह आकाश में उड़ गया। बिम्बसार के मन से अब खीज भी थी और आश्चर्य भी। आखिर वह व्यक्ति कौन था? उसके अशिष्ट व्यवहार और अनर्गल प्रलाप के पीछे रहस्य क्या था। बिम्बसार ने अपना प्रश्न प्रभु महावीर के समक्ष रखा।

भगवान ने कहा- वह व्यक्ति किल्विषक देव था। जैसे मानव-समाज में कुछ व्यक्ति मसखरे स्वभाव के होते हैं। अपनी उलटी-पलटी हरकतों से वे समाज के मानस में कुतूहल मनोरंजन करते हैं। वैसे ही देवताओं में कुतूहल भरी हरकतें करने वाले किल्विषक देव होते हैं। वे अपनी उलटी-पलटी बेढंगी हरकतों से देव परिषद् का मनोरंजन करते हैं। वह व्यक्ति उसी किल्विषक श्रेणि का देव था। अपने शरीर से टपकते कोढ जैसा लेप वह मेरे पांवों को लगा रहा था, वह कोढ नहीं, किंतु वह विशेष प्रकार का चंदन है। तभी तो उसे लेप में किसी प्रकार की बदबू नहीं है।

बिम्बसार भगवान के मुख से जो सुन रहा था, उसको अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। फिर भगवान के कथन पर कोई तर्क का अवकाश भी नहीं था। किंतु उसके अनर्गल प्रलाप से बिम्बसार का मन पूरी तरह अशांत था, उद्वेलित था। उसने प्रभुवर से उसका रहस्य जानना चाहा।

भगवान महावीर ने कहा- मुझे छींक आने पर उसके कथन का अर्थ यह था मेरा शरीर ही अब सिद्ध, बुद्ध और मुक्त अवस्था में मेरे लिए बाधा है। मृत्यु-वरण के साथ ही मैं परमात्म-पद प्राप्त कर लूंगा। इसलिए जल्द-से-जल्द मृत्यु का वरण कर लेने के लिए उसने कहा।

तो मेरे लिए उसने ऐसा क्यों कहा- जितनी लम्बी उम्र जी सकता है, जी ले, सम्राट ने पूछा। भगवान ने कहा- इसका अर्थ यह है अभी इस जीवन में तुझे सारे वैभव-सुख उपलब्ध हैं, उसका आनंद उठाले। इस जीवन के पश्चाद् तो तुझे नरक-योनि के दुःखों को झेलना होगा।

यह सुनकर सम्राट का मन विषाद से भर गया। पर अभी दो और रहस्यों पर से पर्दा उठना बाकी था। अभयकुमार के लिए उस देव-कथन का तात्पर्य बताते हुए भगवान ने कहा- अभयकुमार का वर्तमान जीवन तो सुखमय है ही, अपने धर्माचरण के कारण उसको अगले जीवन में भी स्वर्ग-सुख मिलेंगें। इसलिए उसने कहा- तू चाहे जी और तू चाहे मर। अब रही बात कालक कसाई की, जिसके लिए उसने कहा था- न तू जी, न तू मर। इसका अर्थ यह है वह हिंसा-नफरत भरा जीवन जी रहा है। उसका वर्तमान जीवन भी नरक जैसा है, औरों को भी दुःख-दर्द का जीवन जीने को मजबूर कर रहा है। ऐसे घोर पापाचरण के कारण इसका अगला जीवन भी नरक-यातनाओं में गुजरेगा। इसलिए उसने कालक के लिए 'न तो तूं जी और न मर' वाक्य बोला।

सम्राट बिम्बसार के मानस-चक्षु के सामने उस देव-कथन के रहस्य का परदा उठ गया था। किंतु भगवान के मुख से अपने नरक-गमन की भविष्य-वाणी से वह भीतर-भीतर बुरी तरह से कांप गया। उसने कहा- भगवन् आपके चरणों की शरण लेने वाले को भी नरक-योनि में जाना पड़ेगा?

भगवान ने कहा- वीतराग-धर्म की आराधना के फलस्वरूप तो अगली चौबीसी में तुम तीर्थंकर बनोगे। लेकिन अपने राज्य-संचालन ओर राज-गद्दी की सुरक्षा के लिए तुमने समय-समय पर घोर पापाचरण भी किया है। उस अनंत्तानुबंधी कर्म-बधनों से छुटकारा तो नरक-यातनाओं से गुजरने से ही हो सकेगा।

क्या किसी तप, जप अथवा सदाचरण से इस नरक-बंधन से बचा जा सकता है? सम्राट का अगला प्रश्न था। भगवान महावीर ने नरक-बंधन से बचने के जो-जो उपाय बताये, उन्हीं पर चिंतन/मंथन करना ही इस निबन्ध का उद्देश्य है। यद्यपि भगवान जानते हैं बिम्बसार का नरक-गमन टलना संभव नहीं है। फिर भी वे अहिंसा, संयम, दान आदि सदाचरण की कितनी महिमा है सभी को इसका प्रतिबोध देने के उद्देश्य से वे कुछ साधनों का निर्देशन करते हैं। भगवान ने उनमें पहला उपाय दान-धर्म को बताया।

आपने कहा- तुम्हारे राजमहल में कपिला नाम की दासी है। वह अपने हाथ से सुपात्र-दान कर दे तो तुम्हारा नरक-बंधन टल सकता है, कपिला दासी के हाथ से सम्राट सुपात्र-दान करवा पाते हैं अथवा नहीं, इसकी चर्चा हम आगे करेंगें। अभी तो दान-धर्म की इतनी महिमा क्यों है, इस पर चिंतन/मंथन करना आवश्यक लगता है।

भगवान महावीर के जीवन के साथ तप और ध्यान प्रमुखता से जुड़ा है, यह तो सर्व-विदित है ही। किन्तु उनके जीवन के साथ दान-धर्म भी बराबर जुड़ा है, इस ओर ध्यान कम ही गया है। जबकि उनकी सम्यक्त्व-प्राप्ति अर्थात् आत्मा से परमात्मा की यात्रा का आरंभ उनके द्वारा संत-पुरुषों को दिए गए आहार-दान से ही होता है। उनके जन्म के साथ ही राजा सिद्धार्थ अपनी प्रजा की सुख-समृद्धि के लिए पूरा राज-कोष लुटा देते हैं। अपने दीक्षा-कल्याणक से पूर्व पूरे एक वर्ष तक गरीबों, दलितों और जरूरतमंदों को खुले हाथों दान देते हैं। श्वेताम्बर मत के अनुसार एक देवदूष्य वस्त्र के साथ वे मुनि-दीक्षा लेते हैं। एक निर्धन ब्राह्मण उनके वर्षी-दान के लाभ से दुर्भाग्य-वश वंचित रह जाता है। वह भगवान की मुनि-अवस्था में कुछ पाने की अभिलाषा से जाता है। कहते हैं महावीर उसे भी निराश नहीं लौटाते। अपने देवदूष्य वस्त्र का आधा हिस्सा उसे प्रदान कर देते हैं। इधर बिम्बसार के नरक-गमन से बचने में पहला उपाय दान-धर्म बताते हैं। इतना ही नहीं, भगवान ने मोक्ष-प्राप्ति के चार मार्गों में पहला मार्ग दान-धर्म को ही प्ररूपित किया है।

भगवान महावीर ही नहीं, सभी धर्मों के महापुरूषों ने दान-धर्म की महिमा का बड़ा बखान किया है। भारतीय धर्म ही नहीं, क्रिश्चियन और इस्लाम धर्म ने भी अपने अनुयायियों को दान करने का विधान दिया

है। कहते हैं पैगम्बर मुहम्मद साहब को दिन में जो भी भेंट प्राप्त होती, सायं गरीबों को बांट देते थे। ईसाई मत की सेवा-धर्म की प्रधानता जग-विख्यात है ही। सभी भारतीय धर्म-दर्शनों ने मोक्ष-प्राप्ति/परमात्म-पद प्राप्ति में भी दान-धर्म के महत्त्व को सर्व-सम्मति से स्वीकार किया है। महान् संत कबीर कहते हैं-

पानी बाढो नाव में, घर में बाढो दाम
दोनों हाथ उलीचिये, यही सयानो काम

नाव में यदि पानी भर गया है, घर यदि धन से भर गया है तो दोनों हाथों से उलीचना ही समझदारी का काम है। नाव से पानी नहीं उलीचा गया तो नाव डूब जाएगी। घर से यदि धन नहीं उलीचा गया तो तरह-तरह के दुर्व्यसन घर को बर्बाद कर देंगे। ऋषियों ने यह भी कहा- हाथों की शोभा दान है, कंगन नहीं- दानेन पाणि र्न तु कंगणेन। यह भी कहा गया- ऐसा मत सोचो, दान देने से आपके पास धन की कमी हो जाएगी-

चीड़ी चोंच भर ले गई, नदी न घटियो नीर
दान दिये धन ना घटे, कह गए दास कबीर

धर्म-जगत का यह नियम है आप जो भी देंगे, वह कम नहीं होगा। बल्कि वह दुगुना/सौगुना होगा। आप ज्ञान-दान करते हैं। उससे आपका ज्ञान कम नहीं होगा, जितना बांटेंगें उतना गुना बढ जाएगा। यही बात प्रेम की है, सद्भावना की है, सेवा और परोपकार की है। इसीलिए ऋषि-मुनियों ने कहा- शत हस्तं संकिर, सहस्त्र-हस्तं समाहर- सौ हाथों से दो, हजार हाथों से लो।

विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर की एक कथा मुझे बहुत प्रिय है। राज्योत्सव पर राजा की सवारी निकलने वाली है। रात्रि में राजा शोभा-यात्रा के बारे में सोच रहा है। कहते हैं तभी राजा के कानों में देव-वाणी गूंजती है- पड़ोसी राजा तेरे राज्य पर आक्रमण करने की तैयारी में है। सावधान हो जा। राजा चिंतित हो उठा। पड़ोसी राजा के सेना-बल के सामने टिकने का शक्ति-सामर्थ्य उसमें था ही नहीं। उसने राज्य देवी से आक्रमण से बचने का उपाय पूछा। देवी ने कहा- कल तुम्हारी शोभा-यात्रा के समय पहला व्यक्ति यदि दाता मिल जाए तो संकट टल सकता है।

इधर शहर में एक गरीब ब्राह्मण की पत्नी अपने पति से कहती है, कल राजा की सवारी निकलने वाली है। तुम किसी तरह ऐसा इन्तजाम करो कि महल से बाहर आते ही राजा की पहली नजर तुम्हारे पर पड़े। यदि ऐसा हुआ तो राजा के हाथों मिले दान से हम उम्र भर के लिए इस दरिद्र हालत से मुक्त हो जाएंगे।

गरीब ब्राह्मण ने महल के दरवाजे के ठीक बाहर अपना आसन जमा लिया। हाथी पर सवार राजा ज्यों ही महल-द्वार से बाहर आया, उसकी नजर उस ब्राह्मण पर पडी।

हाथी से नीचे उतरकर वह उसकी ओर बढा। ब्राह्मण सोचने लगा, आज तो मेरी किस्मत सदा-सदा के लिए खुल जाएगी। उसने याचना के लिए ज्यों ही हाथ फैलाना चाहा, तभी राजा बोला- आज तुम्हें कुछ देने के लिए नहीं, तुमसे कुछ लेने के लिए आया हूं। राज्य पर आनेवाले संकट से रक्षा का सवाल है, इसलिए तुम जो भी दे सकते हो, मेरी झोली में डाल दो। वह ब्राह्मण तो हक्का-बक्का रह गया। राजा से कुछ मिलना तो दूर, वह तो खुद याचक बनकर खड़ा है। अब उसे दूं तो क्या दूं। दो मुट्ठी चावल के सिवा पास में कुछ भी तो नहीं। राजा ने कहा- कुछ भी दो, आज तुम्हें कुछ-न-कुछ देना है, कुछ भी मांगना नहीं। ब्राह्मण ने कांपते हुए हाथों से पांच-सात चावल के दाने राजा की झोली में डाल दिये। राजा ने चैन की सांस ली। हाथी पर सवार होकर वह आगे बढ गया।

वह गरीब ब्राह्मण लुटा-लुटा-सा घर पर आया। अपने कन्धे से झोली एक ओर फेंकते हुए ब्राह्मणी से बोला- राजा से कुछ मिलना तो दूर, तुमने दो मुट्ठी चावल के दाने दिये थे, उनमें से भी पांच-सात दाने कम हो गए। तभी ब्राह्मणी की नजर फर्श पर बिखरे हुए चावल के दानों पर गई। उनमें पांच-सात सोने के दाने दिखाई दिये। उसने ब्राह्मण को वे स्वर्णिम दाने दिखाये। अब ब्राह्मण अपना माथा पीटते हुए बोला- अगर ऐसा पता होता तो मैं सारे-के-सारे चावलों के दानों को राजा को दे देता। लेकिन प्रश्न यह है पता होने पर भी क्या वह सचमुच ऐसा कर पाता। सभी महापुरुषों ने कहा है जितना बांटोगे, उतना बढेगा। जितना दोगे, वह दो गुना/सौगुना बनकर लौटेगा। किसान कुछ हजार बीज खेत में डालता है वे लाखों-लाखों में लौट कर क्या नहीं आते हैं? यह सब जानते हुए भी दान के समय मन में कितने-कितने प्रश्न खड़े हो जाते हैं। कहीं ऐसा तो नहीं, और भी न मिले, और जो भी है वह भी हाथ से निकल जाए। बस, ऐसी ही आशंकाओं और अविश्वासों से चलते व्यक्ति महान् लाभ से वंचित रह जाता है।

(क्रमशः)

पाप की भाषा को समझ पाना बहुत मुश्किल है,
जाप की भाषा को समझ पाना बहुत मुश्किल है।
न इनकार ही करते हैं और न स्वीकार ही,
आपकी भाषा को समझ पाना बहुत मुश्किल है।

-आचार्यश्री रूपचन्द्र

स्वतंत्र अस्तित्व का बोध

○ संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

नारी-शिक्षा ने दुनिया के नक्शे को बदल दिया। जो नारी समाज अपने को असहाय, पर-निर्भर और हीन मानता था, वह अपने स्वतन्त्र अस्तित्व का अनुभव करने लगा। उसे अपनी शक्ति और सामर्थ्य का अहसास हुआ। हीन भावना की ग्रंथियां खुलीं। अस्तित्व-बोध के साथ-साथ कर्तव्य-बोध जगा और महिला समाज हर कार्यक्षेत्र में सक्रिय भाग लेने लगा।

शिक्षा का विकास जिस स्तर तक हुआ है, अन्यान्य विकास भी उसी अनुपात से हुए हैं। पहले का नारी-समाज दास-दासी और पशुओं की तरह बन्धन में रहकर भी अपने को कृतार्थ मानता था, क्योंकि उसको यह समझाया गया था कि नारी पुरुष के हाथ का खिलौना होती है। पुरुष के प्रति सर्वात्मना समर्पण ही उसके जीवन की सार्थकता है। पुरुष के चिन्तन के विपरीत सोचना या कुछ करना नारी के लिए घोर अपराध है।

जिस नारी के पास अपनी शिक्षा नहीं, अपना चिन्तन नहीं, अपने विचार नहीं, उसे जिस रूप में कहा गया पुरुष की धरोहर बन गई। अपने स्वतन्त्र अस्तित्व और स्वतन्त्र विचारों को पुरुषों की इच्छाओं में विलीन कर दिया।

पुरुष वर्ग अपने प्रति होने वाले सर्वात्मना समर्पण को पचा नहीं सका। समर्पण का उत्तर संरक्षण के रूप में होना चाहिए था, न कि शोषण के रूप में। लेकिन हुआ यही। समर्पण करने वाले नारी-समाज का संरक्षण के बदले शोषण किया गया।

उस समय का समाज पुरुष-प्रधान समाज था। गृह-संचालन और समाज-व्यवस्था से लेकर न्याय-व्यवस्था, प्रशासन, साहित्यिक जिम्मेदारियां- सब कुछ पुरुषाधीन थीं। स्त्री को समग्र अधिकारों से वंचित कर दिया गया। केवल भोग-सामग्री के रूप में उसका उपभोग होने लगा। उसको ऐसे अन्धकार में रखा गया कि वह पुरुषों के किसी भी उचित-अनुचित कार्य में हस्तक्षेप न कर सके।

नारी समाज ने उदारतापूर्वक पुरुषों का प्रभुत्व स्वीकार किया। पर नारी के इस

प्रभुत्व-प्रदान ने प्ररुषों के अहं को इतना प्रबल बना दिया कि पुरुष समग्र शक्तियों का केन्द्र स्वयं को मानने लगा। नारी के व्यक्तित्व-खंडन के साथ अस्तित्व-खंडन पर भी उतारु हो गया।

धीरे-धीरे नारी के सहज अधिकारों से भी उसका बहिष्कार कर दिया गया।

राजनीति ने ऐसे कानून बनाये जिनमें नारी को कोई अधिकार नहीं। समाज-व्यवस्था में ऐसी परम्पराएं मान्य हुई जो नारी के गौरव को हल्का करने लगीं। परिवारों में ऐसे विषमतापूर्ण व्यवहार स्वीकृत हुए, जिनसे नारी को हीन और तुच्छ माना जाने लगा। शिक्षा के अधिकार से वंचित किया गया। साहित्य में नारी की दुर्बलताओं का अतिरिक्त रूप में दिग्दर्शन व पथदर्शन हुआ जिससे स्वयं नारी समाज ही कुंठाग्रस्त और जड़तामय हो गया। अन्धविश्वाशों और मिथ्या-मान्यताओं का शिकार बनाकर एक तरह से नारी समाज को पुरुष-समाज से अलग-थलग कर दिया गया।

कुछ बाह्य-प्रलोभन और अकारण भय का वातावरण नारी समाज के सम्मुख उपस्थित किया गया ताकि बच्चों का पालन-पोषण, वृद्ध जनों की सेवाएं और पुरुषों के मनमाने अत्याचार वे बिना ननुनच किए सहन करती चली जाएं।

महिला समाज ने बहुत कुछ सहा। बलिदानों से भरा हुआ नारी समाज का इतिहास इसका साक्षी है। अबलाओं ने अपना परम धर्म समझकर आंचल का दूध और आंखों का पानी लुटाया पर उनके इन महनीय बलिदानों और उत्सगों का कोई मूल्यांकन नहीं हुआ।

महिला समाज की निर्दोष आत्मा विद्रोह से भर गई। जीवन भार लगने लगा। अन्यायों को निगलना असह्य हो गया, फिर भी असहाय और निरक्षर नारी किस बलबूते पर क्रांति करे?

कतिपय करुणाशील महापुरुषों ने नारी के अस्तित्व को स्वीकारा। उसके अधिकारों के हनन से उनको ग्लानि हुई। उसका शोषण और उत्पीड़न उन्हें अपना शोषण-उत्पीड़न प्रतीत होने लगा। उन्होंने सामाजिक विषमता और व्यावहारिक मिथ्या मानदण्डों तथा मूल्यांकनों को चुनौती दी। महिला समाज की विशेषताओं का विश्लेषण उन्होंने अपनी रचनाओं में किया। व्यावहारिक जीवन में महिलाओं को पूरे-पूरे अधिकार दिए।

कुछेक समाज की वरिष्ठ आत्माओं का सहारा पाकर महिला समाज जागृत हुआ। अपने अधिकारों की मांग करने लगा। अपने में निहित शक्तियों का अहसास उसे हुआ। बिना किसी झिझक के महिला समाज हर तरह के कार्यक्षेत्र में उतरा। महिला समाज का पदन्यास जहां भी हुआ, बड़ी कुशलता का परिचय दिया। अपनी सहज

दक्षता से नारी ने कला, संगीत और युद्धक्षेत्र तक में अपनी कार्य-क्षमता दिखाई।

नारी के प्रति पुरुषों की शताब्दियों की बनी-बनाई धारणा ढह गई। सभी ने यह अनुभव किया कि नारी जिस किसी भी क्षेत्र का दायित्व ओढती है वह पुरुष से अधिक सुव्यवस्थित और सुचारु रूप से उस कार्य को सम्पादित करती है।

जब नारी ने स्वयं को मान्यता दी तो अब पुरुष वर्ग भी उसका मूल्यांकन करने लगा है। पर नारी का स्बबोध अध्ययन और शिक्षा से जागृत हुआ है। जिस अंश तक नारी-शिक्षा का विकास हुआ है उसी हद तक अस्तित्व-बोध और दायित्व-बोध की स्फुरणा हुई हैं।

अपेक्षा है शिक्षा का विकास पर्याप्त रूप में हो ताकि भेड़ के बीच में रहे शेर के बच्चे की भांति दबा हुआ नारी समाज फिर से अपनी शक्तियों का अनुमान लगा सके और अपनी शक्तियों का देश-सेवा, समाज-सुधार, परिवार-संयोजन और स्वनिर्माण में उपयोग कर सके।

शिक्षा और अस्तित्व-बोध के साथ ही दायित्व-बोध संलग्न हो जाता है, जिसका प्रारम्भ जीवन की सूक्ष्मतम और स्वल्प मूल्यवाली क्रियाओं से होता है, जो आगे जाकर जीवन-विकास की विराट् संभावनाओं को जन्म देती हैं।

गजल

-आचार्यश्री रूपचन्द्र

कटती नहीं है जिंदगी श्वास के सहारे
हम जीते हैं केवल विश्वास के सहारे।

पीते रहे कुछ-ना कुछ घूंट-घूंट उम्र भर
सोचा नहीं, हम जी रहे प्यास के सहारे।

भूले है वर्तमान नहीं पता भविष्य का
कब तलक जियेंगे हम इतिहास के सहारे।

क्यों खींचे दीवारें छोटे से आंगन में
वसुधा है नीड़ एक, आकाश के सहारे।

मिट गए वे जिंदगी से जो रहे चिपके
हैं वही जिंदा, जिए जो क्रॉस के सहारे।

ज्ञान से विज्ञान तक की उड़ान

○ साध्वी मंजुश्री

प्राचीन भारत सारी धरती पर ज्ञान-विज्ञान में सबसे अग्रणी था। भारत के जिस काल को सोने की चिड़िया कहा गया उससे कहीं पहले भी भारत विश्व में अध्यात्म और चिंतन में आगे रहा। इसलिए भारत भूमि को सकल विश्व में गुरु की दृष्टि से देखा गया। जिस दौर में भारत में नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय सक्रिय थे और चीन सहित संसार भर के जिज्ञासु जन भारत में ज्ञानार्जन हेतु आ रहे थे, की कल्पना करना आसान नहीं है। गौतम बुद्ध, महावीर, गुरु नानक देव, कबीर, तुलसीदास, मीरा और रैदास सहित सभी संतों और विचारकों ने उस परंपरा को आगे बढ़ाया। इन सभी का उद्देश्य भारत भूमि के लोगों को अग्रणी रखना तथा मानव जाति को एक बेहतर संसार देना था। सभी ने अपने तरीके से अपने क्षेत्रों में कार्य किया जिनकी बदौलत सारे विश्व ने भारत की सराहना की और वे लोग बहुत उम्मीद भरी दृष्टि से भारत की ओर देखते रहे। अल बरूनी ने अपनी भारत यात्रा का वर्णन करते हुए कहा कि भारत के स्थानीय लोग किसी धातु को सोना बनाने की विद्या जानते थे। इस विद्या को कीमियागरी कहा गया है। पारस के स्पर्श मात्र से किसी धातु के सोना बन जाने की बात भी कही जाती रही है। भारत की प्राचीन रसायन विद्या का भी अल बरूनी ने बखूबी कथात्मक उल्लेख किया है। भारत की ज्ञान से विज्ञान तक की ऊंची उड़ान में उन ओघड़ संत-महात्माओं का भी बहुमूल्य अवदान रहा है। जिनके मुखारबिंद से निकले शब्द मंत्र बन गए। इस मंत्र शक्ति का उपयोग आज भी पीड़ित जनों के कल्याण के लिए हो रहा है। आज तो विज्ञान का युग है किंतु तय है कि विज्ञान ज्ञान से भिन्न नहीं हो सकता। हमें हमारी इस ताकत पर अवश्य ही गर्व होना चाहिए।

अनमोल वचन

दरिया- खुद अपना पानी नहीं पीता।
पेड़- खुद अपना फल नहीं खाता।
सूरज- अपने लिये हर रात नहीं देता।
फूल- अपनी खुशबू अपने लिये नहीं बिखेरता।
क्यों?
क्योंकि, दूसरों के लिए जीना ही असली 'जिंदगी' है।

पद-विहार बनाम वाहन विहार

○ ललित कुमार नाहटा

प्रबुद्ध चिंतक श्री ललितजी नाहटा ने समाज के समक्ष एक ज्वलंत महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठाया है। प्रबुद्ध वर्ग को खुले दिमाग से इस पर चितंन करना चाहिए-
-संपादक

अधिकतर देखा गया है कि लोग अपने सिद्धान्तों, नियमों व परम्पराओं के विपरीत सुनने के लिए तैयार नहीं होते, और तो और जैन अनुयायी भी। आश्चर्य अनेकान्त को मानने वाले भी अपने एकान्तवाद में ही जीना पसंद करते हैं जबकि उन्हें तो अनेकान्तवाद की दृष्टि रख दूसरे पहलू को भी देखना व समझना चाहिये। समय के अनुसार परिवर्तन की आवश्यकता हो तो परिवर्तन करने में कोई दोष नहीं। परिवर्तन न करना चाहें, न करें लेकिन यह सुनने, पढ़ने समझने का साहस तो कीजिये कि समय की मांग क्या है?

पद विहार के स्थान पर वाहन विहार के विषय को सन् 2009 में मैंने हुआ था। विगत वर्ष में जैन धर्म संघ के सभी प्रमुख आचार्यों व संघ अग्रणियों को व्यक्तिगत पत्राचार द्वारा विस्तृत चर्चा का विषय बनाने का प्रयास किया। अनेकों ने पक्ष-विपक्ष में खुले मन से लिखा तो अनेकों ने पता नहीं क्यों मौन रहना ही श्रेयस्कर समझा? लीक से हटकर विषय था। मेरा चिन्तन मौलिक तो लगा पर किसी का परम्परा से हटने का मन नहीं, तो कुछ संकोचवश चुप!

जब कोई साधु-संत दुर्घटना की चपेट में आते हैं तब सुरक्षा के उपायों हेतु जोर-शोर से चर्चा हाती है, बयानबाजी होती है, सरकार से मिलने प्रतिनिधि मण्डल जाते हैं, पत्राचार होता है, लेकिन कुछ ही दिन बाद वह भूली-विसरी यादें मात्र रह जाती हैं।

यह दुर्घटना अगर जानबूझ कर करवाई जाती है तो उन अपराधियों के न पकड़े जाने पर उनका हौसला बढ़ता है, अतः सख्त जांच करवाकर उन्हें पकड़वाकर कठोर दण्ड दिलाया जाना चाहिये। अगर असावधानी से होती है तो इसका उपाय गम्भीरता से किया जाना चाहिये। ये असावधानी वाहन चालकों की तो होती ही है, साथ ही साथ संतों की तरफ से भी होती है व श्रावक वर्ग से भी। श्रावक वर्ग से इसलिए कि वे संतों की असावधानी को गम्भीरता से नहीं लेते व उन्हें असावधानी करते रहने देते हैं।

श्रावकों को विशेषकर संघ व समाज का नेतृत्व करने वालों को कुछ नियम बनाकर कड़ाई के साथ उसका पालन करवाना चाहिए व उस हेतु संत समाज को विनम्रतापूर्वक लेकिन दृढ़ता के साथ निर्देश देने चाहिए। संत कभी भी इस विषय पर स्वयं निर्णय

नहीं लेंगे। संघ को संतों के साथ बैठकर विहार में सुरक्षा के दृष्टिगत कुछ नियम, उप-नियम बनाने चाहिए। जैसे-

1. सूर्योदय के पूर्व विहार न हो, अर्थात् रात्रिकालीन विहार पर रोक लगे। जानबूझकर दुर्घटना करने वाले अंधेरे का फायदा उठाते हैं व उनका गाड़ी नं. भी नहीं देखा जा सकता।
2. राजमार्ग को छोड़कर विहार हो।
3. विहार की अधिकतम सीमा 10 कि.मी. हो। क्षेत्र परिणाम निश्चित हो। एक बार में दूरस्थ स्थानों पर जाने की प्रवृति पर रोक लगे।
4. संघ के व्यक्ति साथ में हों जिनकी संख्या कम से कम 5 हो व संतों की संख्या से दोगुने हों।
5. रेडियमयुक्त जैकेट का उपयोग संत स्वयं करें या साथ में चल रहे श्रावक व सेवादार। रेडियमयुक्त जैन ध्वज साथ लेकर चलें।
6. मार्ग की विपरीत दिशा में चलें व सड़क पर न चल फुटपाथ पर चलें। एक के पीछे एक चलें व आपस में वार्तालाप न हो (मौनपूर्वक विहार)।
7. विहार करते वक्त स्वाध्याय न करें।
8. मात्र प्रतिष्ठा करवाने हेतु संतों को दूरस्थ स्थान से न बुलवाया जाय वरन् निकटवर्ती संतों से प्रतिष्ठा करवाई जाय। विशेष संत से ही अंजनशलाका करवानी हो तो परमात्मा की प्रतिमा संत के पास भेज अंजनशलाका करवाकर विधिकारक से प्रतिष्ठित करवायें।
9. जिस क्षेत्र में विहार हो रहा हो वहां के पुलिस थाने को सूचित किया जाय।
10. डोली या ट्राईसिकल की सवारी वालों का विहार न हो, उनका स्थिरवास करवायें व किन्हीं कारणों से विहार जरूरी है तो वाहन का उपयोग करें।
11. सभी संतों के वाहन प्रयोग के लिए जब तक सहमति न बनें तब तक साध्वी जी के लिए दुर्गम व अनजान रास्तों के लिए वाहन प्रयोग खोला जाय व आवश्यक किया जाय। उपरोक्त के अलावा ओर अन्य बिन्दुओं को चिन्हित कर उस पर चर्चा हो।

हमारा संघ व संत समाज अपनी सोच को परमात्मा महावीर के समय के ईर्द-गिर्द रखता है। जबकि उस काल व आज के समय की परिस्थितियों में आमूलचूल परिवर्तन हो गया है। वातावरण, श्रद्धा, सेवाभाव, समय, गति सब में बदलाव आ गया। न महावीर रहे न वो समय ही रहा। आज महावीर को तो मानते हैं महावीर की बातों को, संदेशों को कितना मानते हैं?

तर्क देते हैं महावीर पद विहार करते थे लेकिन यह नहीं सोचते कि उनके साथ वाहन नहीं चलता था, व्यवस्था नहीं चलती थी, पूर्व निर्धारित कार्यक्रम नहीं होते थे, लम्बे व योजनाबद्ध विहार नहीं होते थे, खाद्य सामग्री व ग्रंथों के बण्डल नहीं होते, न पुलिस की सुरक्षा होती, न एम्बुलेंस व मीडिया व्यवस्था की गाड़ी साथ में होती थी, न यात्रा बजट होता था न पंडाल व्यवस्था साथ चलती थी, न पोस्टरों की भरमार होती थी न धन्ना सेठों व शासकों को आमंत्रित

किया जाता था। आज इन सब बातों में, नियमों में, परम्पराओं में जब परिवर्तन हो चुके हैं तो खुले मन से स्वीकार कर आज पद विहार की जगह वाहन विहार को ही नियम व परम्परा बनाने में संकोच क्यों? या फिर परमात्मा महावीर की तरह ही विहार करें।

वैसे परमात्मा महावीर ने भी अनेकों बार आवश्यकता पड़ने पर सार्वजनिक वाहन नौका का उपयोग किया था। जल विहार को हम वर्तमान जैन मतानुसार घोर कर्मबन्ध का कारण मानते हैं। कहां रोक पाये वो कर्मबन्ध परमात्मा के मोक्ष प्राप्ति को? क्या कहीं उल्लेख मिलता है कि परमात्मा ने उस कर्मबन्ध की निर्जरा की या प्रायश्चित किया? स्पष्ट है अच्छे उदेश्य के लिये वाहन प्रयोग कर्मबन्ध का कारण नहीं। इतिहास में ऐसे उदाहरण भी हैं कि सिद्ध संतों ने एक जगह से दूसरी जगह जाने हेतु लब्धि का प्रयोग किया, यह पद विहार की श्रेणी में नहीं आता।

जिनेश्वर परमात्मा द्वारा निर्धारित नियमों में व आगमिक सिद्धान्तों में परिस्थितिजन्य द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव के अनुसार परिवर्तन हुए हैं तो आज अति आवश्यक होने पर भी पद विहार की जगह वाहन विहार के लिए चिन्तनपूर्वक परिवर्तन क्यों नहीं? उदाहरण स्वरूप परमात्मा द्वारा निर्धारित नियमों व आगम सिद्धान्तों में कुछ परिवर्तन :-

परमात्मा ऋषभदेव के समय में अचेल-नग्नता व पांच महाव्रत के विधान को अजितनाथ से पार्श्वनाथ तक परिवर्तन कर के सचेल-सवस्त्र व चार महाव्रत का विधान किया, जिसे पुनः परमात्मा महावीर ने अचेल-नग्नता व पांच महाव्रत में परिवर्तित किया। आचार्य आर्यरक्षित ने देशकालानुसार भिक्षुओं के लिए एक पात्र की जगह दूसरे पात्र का विधान किया। भिक्षु के दिन के तीसरे पहर में एक बार आहार व रात्रि के तीसरे पहर में एक पहर की निद्रा में परिवर्तन आज स्पष्ट परिलक्षित है। वर्जित लेखन कार्य को देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण ने आगम रक्षार्थ बल्लभीपुर में कलम पकड़ी जो आज के समय तक ग्रंथों की हजारों प्रतियां के धड़ा-धड छपने में परिवर्तित हो गयी। ये तो धर्म की मूल परम्पराओं व सिद्धान्तों में तीर्थंकर से लेकर आगमों तक परिवर्तन के कुछ ही उदाहरण हैं, सामाजिक परिवर्तन की तो कोई थाह ही नहीं है। कुछ को यह भ्रम है कि वाहन प्रयोग से संतों की प्रतिष्ठा गिरेगी, पूज्यता लुप्त हो जायेगी व जैन संत अपनी पहचान खो देंगे। आज के परिप्रेक्ष्य में यह भ्रम और सोच निराधार है, क्योंकि वर्तमान में ठीक इसके विपरीत बात हो रही है। जैनेतर यह समझते हैं कि जैन लोग अपने पूज्यों के लिए व्यवस्था नहीं कर रहे, न ही उनकी सुरक्षा की, न ही शुद्ध स्थान की। अनेकों बार उन्हें तिरस्कार व दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ता है, जिसके कारण प्रतिष्ठा व पूज्यता को ठेस लगती है। प्रतिष्ठा से भी अधिक महत्व, सुरक्षा व गरिमा का है। जब संतों को ही खो देंगे तो उनकी पहचान खो जाने का प्रश्न ही कहां रहेगा?

एक आचार्य भगवन्त यह लिखते हैं कि 'विहार के ऊपर पाबन्दी आ गयी तो जिनशासन को कल्पनातीत नुकसान पहुंचेगा' हम विहार की पाबन्दी की बात नहीं कर रहे वरन् विहार पैदल के साथ ही साथ जहां आवश्यकता हो वहां वाहन से करने की बात कर रहे हैं। वैसे पिछले 2500 वर्षों में जिनशासन की गरिमा के साथ ही साथ जैन संख्या का क्या हाल हुआ है, क्या यह चिन्ता का विषय नहीं?

ये तो संभव नहीं लगता कि राज्य-सत्ताधीश पद विहारियों के लिए कोई अलग से सुविधा देंगे। जैसे पांव को तपती धरती से बचाने के लिए पर कारपेट न बिछा जूते पहने जाते हैं वैसा की कुछ सुरक्षित विहार के लिए सोचना आज ही आवश्यकता है।

वर्तमान में हिंसा-अहिंसा का भी कारण नहीं रहा पद विहार। गिनती के संतों को छोड़ सभी के साथ विहार व्यवस्था हेतु वाहन तो चलते ही हैं वह भी तीनगुना और वह भी उन्हीं के निमित। जन-साधारण के उपयोग में आने वाले यातायात साधनों में तुलनात्मक हिंसा कम है बनिस्पत विहार हेतु साथ चल रहे साधन से।

धर्म प्रचार-प्रसार का भी कारण नहीं रहा। कारण पूर्व निर्धारित विहार कार्यक्रम वह भी अधिकतर राजमार्ग या प्रमुख मार्गों से ही। 'रमता योगी' का तो चलन ही नहीं रहा तो रास्ते के गांवों में आवश्यकतानुसार रुकने का कार्यक्रम बनता ही नहीं। प्रचार-प्रसार वर्तमान उपलब्ध साधनों से अधिक होगा। आचार्य सुशील मुनि जी ने विदेशों में धर्म को बहुत फैलाया, यह सच्चाई है जिससे इनकार नहीं किया जा सकता।

स्वस्थ रहने के लिए ये लम्बे पद विहार सही नहीं, कारण भयंकर सर्दी, गर्मी व बरसात बाधा देते हैं। वैसे भी स्थानीय पद विहार तो प्रतिदिन हो ही जाता है।

<u>वाहन विहार के लाभ</u>

- आहार शुद्धि भी अधिक रहती है।
- सड़क दुर्घटनाओं से छुटकारा मिलेगा।
- भयमुक्त व कम खर्चीला विहार होगा।
- ज्ञान के विस्तार में अति महत्वपूर्ण।
- अध्ययन अध्यापन व साधना हेतु समय का सदुपयोग।
- दीक्षा हेतु परिवार के लोग भयमुक्त हो निश्चिंतता से आज्ञा देंगे।
- समस्त जीवों के कल्याण व विश्व शांति हेतु लाभदायक अर्थात् निज कल्याण से जन कल्याण।

एक बार पुनः यह बात लिख अपनी कलम को विराम दूंगा :-

विकासोन्मुखी परम्परायें परिवर्तनशील होती हैं। परिवर्तन की आवश्यकता है तो कदम उठा लेना चाहिए। जो धर्म अपने मौलिक तत्व द्वारा वर्तमान युग की मांग अथवा आवश्यकता की पूर्ति का सामर्थ्य खो बैठता है, उसका अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है। 2500 वर्षों में क्या खोया क्या पाया, गम्भीर चिंतन की आवश्यकता है। चुनौती पर समय रहते ध्यान देना अति आवश्यक है।

बसंत पंचमी पर विशेष

विलुप्त क्यों हो चली हैं सरस्वती

वसंत पंचमी के दिन हम सुबह-सुबह सिर से नहाकर अपने स्कूल की तरफ भागते थे, वह दिन हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण होता था। हमारी प्रिंसिपल सुश्री सान्याल हर वर्ष सरस्वती पूजा का आयोजन जरूर करवाती थीं। सुबह की हल्की ठंड में भोग की तैयारी करने के गौरव और उत्साह से भरे बड़ी क्लासों के बच्चे पत्तों के दोनों में बूंदी, गंडेरी और बेर भर कर तैयार करते थे। हाथों में फूल-पत्र लेकर श्रद्धा से हम बंगाली पंडित मोशाय के मंत्रों को शुद्ध-अशुद्ध रूप में दोहराते थे, बिना अर्थ समझे। पर विश्वास पूरा रहता था कि देवी हमारी सफलता की चाह जरूर पूरा करेंगी।

लाल किनारे की सफेद साड़ी में सजी हमारी प्रतिमा केवल फूलों से लदी होती थी। उसके विसर्जन के दिन हम सब उदास हो जाते थे।

जब कॉलेज पहुंची तो विश्वविद्यालय परिसर में भी कहीं न कहीं सरस्वती पूजा होती थी। पढ़ने के बाद पढ़ाना शुरू करने पर भी सरस्वती पूजा का आकर्षण जस का तस बना रहा। कुछ समय बाद हमारे कॉलेज के संगीत विभाग ने एक कक्ष में यह आयोजन शुरू किया। बड़ी प्रतिमा का स्थान छोटी पीतल की मूर्ति ने ले लिया ओर पुष्पांजलि मंत्रों की परिणति आरती में हो गई। प्रसाद का वही रूप था, केवल समय सीमित हो गया था। रिटायरमेंट के बाद कॉलेज जाना नहीं हो पाया। बरसों बाद पूजा के समय वहां पहुंची तो देखा सन्नाटा पसरा था। पता करना चाहा तो लोग ऐसे अचरज से देखने लगे, जैसे मैं पश्तो में बोल रही थी। फिर कुछ पुराने लोगों ने बताया कि सालों से वहां सरस्वती पूजा बंद हो चुकी थी। दुख हुआ।

आंकड़े बताते हैं कि ग्लोबलाइजेशन के बाद भारत अधिक धर्मप्रवृत्त हो रहा है। धार्मिक यात्राओं की बाढ़-सी आ रही है। विदेशों में भी मंदिरों की संख्या बढ़ रही है। इसलिए प्रादेशिक भाषाओं के अलावा अंग्रेजी जानने वाले पंडितों की मांग भी बढ़ी है। यज्ञों और मंदिरों पर खर्च बढ़ा है। तीर्थयात्रियों की सुविधाएं बढ़ी हैं। तभी तो कांवड़ियों का टिड्डी दल कुछ समय के लिए आम आदमी की सांसें बंद कर देता है। फिर मां सरस्वती से ऐसी कौन-सी भूल हो गई है? मंदिरों की संख्या बरसात के मशरूमों की तरह फैल रही है। उस अनुपात में शिक्षा संस्थानों की संख्या बहुत कम है। सोचते-सोचते ध्यान आया कि बचपन में सुनते थे, लक्ष्मी जहां आती है, वहां सरस्वती को टिकने नहीं देती।

आज देश बुलंदियों को छू रहा है। विदेशों में भी प्रायः हर क्षेत्र के भारतीयों ने ऊंचा स्थान पाया है। इसके पीछे सरस्वती की ही कृपा है, लेकिन उनके बूते पर आई लक्ष्मी ने अपनी चमक-दमक से लोगों

की इस तरह काबू में कर लिया है कि सीधी-सादी सरस्वती की तरफ किसी का ध्यान ही नहीं जाता है।

दुर्गापूजा के पांचों दिन ज्यों के त्यों सुरक्षित हैं। शानशौकत पहले से हजार गुना बढ गई है। गणेश करोड़पतियों के देवता की श्रेणी में पहुंच गए हैं। फक्कड़ शिव के लिए अमरनाथ की यात्रा पर पहले कोई बिरला ही जाता था, लेकिन अब संख्या बढ़ने की वजह से उसे कई पारियों में बांटना पड़ता है। तिरुपति में बाल चढ़ाने वालों का रेकॉर्ड बन रहा है। वैष्णों मंदिर से होने वाली आय प्रबंधक पद के लिए दावेदारी का झगड़ा खड़ा कर रही है। ऐसे धार्मिक देश में बेचारी सरस्वती क्यों कुछ ही साधकों की मोहताज रह गई है?

आम घरों में शायद ही सरस्वती का चित्र मिले। बच्चों के कंधों पर लदे भारी बस्ते उनके ज्ञानवर्द्धन के लिए काफी हैं? क्या ज्ञान में आस्था और श्रद्धा की जरूरत नहीं है? लक्ष्मी प्रेम से अभिभूत घर और स्कूल का माहौल बच्चों में आखिर वही भाव जगाएगा, जो आगे जाकर भ्रष्टाचार की जड़ बन जाता है।

-प्रस्तुति : सुनंदा शिवदास

कर्त्तव्य की रक्षा

बात सोलहवीं सदी की है। फ्रांसिसी शहर तूलोन के पास एक टापू के प्रकाश गृह (लाइट हाउस) में काम करने वाला व्यक्ति अचानक बीमार हो गया। सवाल उठा कि अब जहाजों को रोशनी दिखाने का काम कौन करे। रात के केवल नौ ही बजे थे रोशनी दिखाने वाले की पत्नी ने अपने कर्त्तव्य का महत्व समझ खुद ही लैम्प जला दिया। लैम्प जलाकर वह लौटी ही थी कि उसने पाया उसका पति मरणासन्न है। वह चिंतित हो गई। इतने में उसके सात साल के बेटे और नौ साल की बेटी ने आकर बताया कि लैम्प घूम नहीं रहा है। दरअसल प्रकाश गृह का लैम्प चारों ओर घूमकर अपना प्रकाश फैलाता था। यदि वह एक ही दिशा को प्रकाशित करता तो जहाजों के टकराने और डूबने की आशंका थी। पत्नी पति को मृत्यु शय्या पर छोड़ बच्चों के साथ लैम्प ठीक करने चली गई, पर वह ठीक नहीं हुआ। उसने अपने बच्चों को वहीं बैठाते हुए कहा- 'तुम लोग रातभर लैम्प को चारों ओर घुमाते रहना। आज बादलों के कारण चांद की रोशनी भी नहीं है।' यह कहकर वह अपने पति के पास चली गई। दोनों बच्चे सुबह के छह बजे तक लैम्प घुमाते रहे। इस तरह उन्होंने कई जहाजों को रोशनी दिखाई और उन्हें दुर्घटना से बचाया। सुबह तक उन बच्चों के पिता का निधन हो चुका था। उनकी मां रो रही थी लेकिन उसके चेहरे पर कर्त्तव्य निभाने का संतोष झलक रहा था। वह जानती थी कि उसने और दोनों बच्चों ने एक महान काम को अंजाम दिया है और यही उसके पति के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

-प्रस्तुति : साध्वी वसुमती

दो ऋषियों की कथा

प्रत्येक उपनिषद् में ईश्वर की महिमा को विस्तार में दरशाया गया है। ईश्वर का अस्तित्व प्रत्येक प्राणी, वस्तु में मिलता है। इसी ईश्वर की महिमा से ओतप्रोत यह कथा प्रस्तुत की गई है। शौनक कापेय और अमिप्रतारी नाम के दो ऋषि वन में रहते थे। वे दोनों ही वायुदेव के उपासक थे, अतः उनका अधिकांश समय वायुदेव की उपासना में ही व्यतीत होता था। उन दोनों के अनेक शिष्य थे, जो आश्रम में ही रहकर दोनों ऋषियों से शिक्षा ग्रहण करते थे एवं आश्रम की व्यवस्था भी देखते थे।

दोपहर के समय जब दोनों ऋषि भोजन के लिए बैठे तो एक ब्रह्मचारी भोजन का पात्र लिए उनके समीप पहुंचा। उसने ऋषियों से कहा- 'मैं भूखा हूं ऋषिवर! भोजन का कुछ अंश मेरे भिक्षा-पात्र में भी डाल दीजिए।'

ऋषियों ने इस बिन बुलाए मेहमान को विचित्रता भरी नजरों से देखा। फिर वे उस ब्रह्मचारी से बोले- 'नहीं बालक! तुम्हें देने के लिए अतिरिक्त भोजन हमारे पास नहीं है।'

ब्रह्मचारी बोले- 'ऋषिवर! किसी भूखे को भोजन कराना हमारे शास्त्रों में सबसे बड़ा पुण्यकारी कार्य माना गया है। अतः मेरा निवेदन है कि आप मुझ भूखे को भोजन का कुछ अंश अवश्य दें।'

ऋषियों ने फिर दृढ़ता से इंकार कर दिया, लेकिन भिक्षुक ब्रह्मचारी निराश नहीं हुआ। उसने कहा- 'अच्छा, पूज्य ऋषिवरों, मुझे भोजन नहीं देते, न सही, किंतु मुझे मेरे कुछ प्रश्नों का उत्तर ही दे दो।'

'पूछो, क्या पूछना चाहते हो?' ऋषि बोले।

'किस देवता की उपासना करते हैं आप? ब्रह्मचारी ने पूछा।

ऋषि बोले- 'हम दोनों उस वायुदेव की उपासना करते हैं, जो 'प्राण' नाम से भी जाना जाता है और सबकी सांस है।'

ब्रह्मचारी बोला- 'तब तो आप यह बात भी अवश्य जानते होंगे कि वायु समस्त विश्व में व्याप्त है। चल-अचल, दृश्य, अदृश्य जो कुछ भी है, वह सब प्राण ही है?'

'हां-हां, पता है हमें।' ऋषि बोले। 'अब यह बताइए कि यह भोजन आपने किसे अर्पित किया था?' ब्रह्मचारी ने फिर प्रश्न किया।

'प्राण को अर्पित किया था हमने यह भोजन।' ऋषि बोले- 'इसलिए अर्पित किया था हमने यह भोजन प्राण को, क्योंकि प्राण सारे ब्रह्मांड में व्याप्त है।'

यह सुनकर ब्रह्मचारी ने फिर प्रश्न किया, 'ऋषिवर! यदि प्राण सारे ब्रह्मांड में व्याप्त है तो मुझमें भी प्राण का वास है, मैं

भी तो ब्रह्मांड का अंश हूं।'

'हां-हां, अवश्य हो।' ऋषियों ने सहमति जताई।

'भूख से पीड़ित मेरे इस शरीर में, जो कि आपके समक्ष खड़ा है, प्राण का ही संचार है, है ना?' ब्रह्मचारी ने पूछा।

'हां, है। इस विषय में तुम्हारा कथन बिल्कुल सच है।'

'तब ऋषिवर! मुझे अन्न से वंचित रखकर आप मानो प्राण को ही अन्न से वंचित कर रहे हैं। उसे हमारे शास्त्रों में 'अत्ता' अर्थात् प्रलयकाल में सबको अपना ग्रास बनाने वाला, सबको अपने भीतर लील लेने वाला कहा गया है। ये सभी भौतिक पदार्थ, यहां तक कि मनुष्य की वाणी, आंख, कान, नाक तथा मन भी उसी में विलीन हो जाते हैं फिर क्या बात है कि इन सबको अपना भक्ष्य बनाने वाले परमेश्वर को आप नहीं जानते? यदि आप लोग परमात्मा की इस महिमा को जानते होते, तो मुझे भोजन अवश्य देते। आपने तो मनुष्य-मनुष्य में भेद कर दिया है।' ब्रह्मचारी के मुख से ऐसे तत्त्वज्ञान की बातें सुनकर ऋषि चकित रह गया।

तब शौनक कापेय ने उस ब्रह्मचारी से कहा- 'हे ब्रह्मचारी! ऐसी बात नहीं है कि हम चराचर जगत को प्रलय काल में अपना भोजन बनाने वाले परमात्मा को नहीं जानते, निश्चय ही हम उस परमदेव, प्रज्ञाओं को पैदा करने वाले उस अखंड नियमों वाले परमेश्वर को जानते हैं। प्रलयकाल में यह सृष्टि उसी में विलीन हो जाती है। जो स्थूल रूप में दिखाई पड़ती है, वह अंत में सूक्ष्म बनकर उसी में विलीन हो जाती है। वह परमात्मा चाहे हमारी भांति साधारण नहीं करता। किंतु वह तो सारी सृष्टि को ही समेटकर उसे अपना भोज्य बनाता है। विद्वान लोग उसी की आराधना करते हैं।

इसके पश्चात् दोनों ऋषियों ने स्नेहपूर्वक ब्रह्मचारी को अपने निकट बैठाया और उसे भोजन खिलाकर, उसका समुचित सत्कार किया।

तृप्त होकर उस ब्रह्मचारी ने भी दोनों ऋषियों को उन शास्त्रों का मर्म समझाया, जिन्हें ऋषियों ने केवल पढ़ा था, किंतु उनका मर्म नहीं समझा था। ब्रह्मचारी द्वारा शास्त्रों का मर्म समझाने का सार यही था कि भौतिक सृष्टि तो अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी तथा आकाश, से बनी है, जबकि यह जीव जिस समय शरीर में प्रविष्ट होता है तो पांचों प्राणों से उसका संचालन करता है, किंतु परमात्मा यथा समय इस सृष्टि को अपनी इच्छानुसार जब चाहता है, अपनी इच्छित अवस्था में ले जाता है। इसीलिए वेदांत में उसे 'अत्ता' अर्थात् चराचर जगत को ग्रहण करने वाला कहा गया है।

-प्रस्तुति : साध्वी पद्मश्री

कहानी

वेताल पच्चीसी-16

हिन्दी कथा-साहित्य में बेताल पच्चीसी की अपनी अलग पहचान है। इन कथाओं में नीति, संस्कृति और जीवनोपयोगी शिक्षाएं हैं। उसी की एक-एक कथा पढिये हर अंक में।

-गतांक से आगे

हिमालय पर्वत पर गंधर्वों का एक नगर था, जिसमें जीमूतकेतु नामक राजा राज करता था। उसका एक लड़का था, जिसका नाम जीमूतवाहन था। बाप-बेटे दोनों भले थे। धर्म-कर्म में लगे रहते थे। इससे प्रजा के लोग बहुत स्वच्छन्द हो गये और एक दिन उन्होंने राजा के महल को घेर लिया। राजकुमार ने यह देखा तो पिता से कहा कि आप चिन्ता न करें। मैं सबको मार भगाऊंगा।

राजा बोलो- नहीं, ऐसा मत करो। युधिष्ठिर भी महाभारत करके पछताये थे।

इसके बाद राजा अपने गोत्र के लोगों को राज्य सौंप राजकुमार के साथ मलयाचल पर जाकर मढ़ी बनाकर रहने लगा। वहां जीमूतवाहन की एक ऋषि के बेटे से दोस्ती हो गयी। एक दिन दोनों पर्वत पर भवानी के मन्दिर में गये तो दैवयोग से उन्हें मलयकेतु राजा की पुत्री मिली। दोनों एक-दूसरे पर मोहित हो गये। जब कन्या के पिता को मालूम हुआ तो उसने अपनी बेटी उसे ब्याह दी।

एक रोज की बात है कि जीमूतवाहन को पहाड़ पर एक सफेद ढेर दिखाई दिया। पूछा तो मालूम हुआ कि पाताल से बहुत-से नाग आते हैं, जिन्हें गरुड़ खा लेता है यह ढेर उन्हीं की हड्डियों का है। उसे देखकर जीमूतवाहन आगे बढ़ गया। कुछ दूर जाने पर उसे किसी के रोने की आवाज सुनाई दी। पास गया तो देखा कि एक बुढ़िया रो रही है। कारण पूछा तो उसने बताया कि आज उसके बेटे शंखचूड़ नाग की बारी है। उसे गरुड़ आकर खा जायेगा।

जीमूतवाहन ने कहा- मां, तुम चिन्ता न करो, मैं उसकी जगह चला जाऊंगा। बुढ़िया ने बहुत समझाया, पर वह न माना।

इसके बाद गरुड़ आया और उसे चोंच में पकड़कर उड़ा ले गया। संयोग से राजकुमार का बाजूबंद गिर पड़ा, जिस पर राजा का नाम खुदा था। उस पर खून लगा था। राजकुमारी ने उसे देखा। वह मूर्च्छित हो गयी। होश आने पर उसने राजा और रानी को सब हाल सुनाया। वे बड़े दुःखी हुए और जीमूतवाहन को खोजने निकले। तभी उन्हें शंखचूड़ मिला।

उसने गरुड़ को पुकार कर कहा- हे गरुड़! तू इसे छोड़ दे। बारी तो मेरी थी।

गरुड़ ने राजकुमार से पूछा- तू अपनी जान क्यों दे रहा है?

उसने कहा- उत्तम पुरुष को हमेशा दूसरों की मदद करनी चाहिए।

यह सुनकर गरुड़ बहुत खुश हुआ उसने राजकुमार से वर मांगने को कहा। जीमूतवाहन ने अनुरोध किया कि सब सांपों को जिन्दा कर दो। गरुड़ ने ऐसा ही किया।

फिर उसने कहा- तुझे अपना राज्य भी मिल जायेगा।

इसके बाद वे लोग अपने नगर को लौट आये। लोगों ने राजा को फिर गद्दी पर बिठा दिया।

इतना कहकर वेताल बोला- हे राजन् यह बताओ, इसमें सबसे बड़ा काम किसने किया?

राजा ने कहा- शंखचूड़ ने?

वेताल ने पूछा- कैसे?

राजा बोला- जीमूतवाहन जाति का क्षत्रिय था। प्राण देने का उसे अभ्यास था। लेकिन बड़ा काम तो शंखचूड़ ने किया, जो अभ्यास न होते हुए भी जीमूतवाहन को बचाने के लिए अपनी जान देने को तैयार हो गया।

इतना सुनकर वेताल फिर पेड़ पर जा लटका। राजा उसे लाया तो उसने फिर एक कहानी सुनायी।

-क्रमशः

चुटकुले

1. चंदन- यार, डॉक्टर पर्चे पर ऐसा क्या लिखता है जो केवल मेडिकल स्टोर वाले ही समझ पाते हैं?

प्रवीण- वो लिखते हैं- मैंने तो लूट लिया, तू भी लूट ले...।

2. संता और बंता ने जिंदगी में पहली बार रिक्शा देखा।

संता- देखो कितना छोटा तांगा है।

बंता- हां... और गधा तो देखो, बिल्कुल आदमी जैसा दिखता है...।

3.बंता- सर ये नटूरे क्या होता है।

सर- स्पेलिंग बोलो

बंता- N-A-T-U-R-E

सर- यह नेचर है

सर- मैं तुम्हें इस स्कूल से निकाल दूंगा

बंता सर ऐसा मत करना नहीं तो मेरा फटूरे खराब हो जाएगा।

4. लच्छू जी ओबामा के पास से इंग्लिश की ट्रेनिंग लेकर आए।

एक दिन उन्हें एक कॉल आई।

लच्छू जी बोले- हू इज स्पीकिंग?

जवाब आया- हम ससुरा ओबामा बोल रहा हूं?

-प्रस्तुति : माधव

संत की परीक्षा

दादू बड़े मस्त साधु थे। उन्होने अपने मन और तन को बराबर बराबर क्षमतावान बना लिया था। सलौने नगर सांभर में वे रहते थे।

एक बार दो भक्त मित्रों ने सामूहिक मंत्रणा कर निश्चय किया किसी अच्छे गुरू की तलाश की जाये और उन्हीं को अपना गुरू मान लिया जाए।

दोनों मित्र सांभर नगर (राज.) पहुंच गए। पता किया दादू की कुटिया कहां है? कुटिया के नजदीक पहुंचे तो एक आदमी सिर मुंडाए, उनके सामने से गुजरा।

मित्रों ने कहा-कितने दिनों में हम लोग यहां पहुंचे। गुरू की खोज में यहां आए कि बीच में नंगे सिर वाले इस अपशकुनी ने रास्ता काट दिया। यह श्रम भी लगता है व्यर्थ ही चला जाएगा।

दोनों मित्र क्रोध में भर गए। उन्होंने सिर मुंडवाए जा रहे उस आदमी को आगे बढ़, तमाचे मार दिए। वह आदमी कुछ न बोला। मौन बना रहा।

पूछ-पाछ करते मित्र कुटिया पर पहुंचे। किसी व्यक्ति से पूछा-संत दादू जी कहां हैं? उस व्यक्ति ने कहा-अंदर बैठे है चले जाओ! वे अंदर गए तो दादू बोले-आओ! भक्तो! बैठो! कहां से आ रहे हो ?

दोनों मित्रों ने दादू को देखा तो देखते ही रह गए। जैसे पत्थर की मूरत हों। उन दोनों के चेहरे पर एक ही परेशानी थी कि जिस व्यक्ति को हमने तमाचे मारे थे, यह वही चेहरा है। भय से वे कांपने लग गए। संत दादू ने बड़े प्यार से कहा-कांप क्यों रहे हो भाई। कांपना तो मुझे चाहिए था कि परीक्षा में खरा उतरा हूं कि नहीं। यह तो जगत् का व्यवहार है। लोग एक मिट्टी की साधारण हांडी को लेने जाते हैं तो उसे भी ठोक-बजा कर देख लेते हैं। और तुम तो गुरू बनाने निकले हो। यदि तुमने जरा परीक्षा ले भी ली तो कौन-सा अपराध कर दिया?

दोनों व्यक्ति दादू के चरणों में गिर पड़े और उनके शिष्य बन गए।

-प्रस्तुति : रवि कुमार

गर्मी शीतल वारिसो, वर्षो ताजा होय।
सदा नहावे शीत में, गर्म-गर्म जल होय।।

साग खाइए, रोग भगाइए

हमारे भोजन में हरी पत्तेदार साग-सब्जियों का विशेष महत्व है। 'साग' कब्जनाशक होने के अलावा शरीर में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, लौह, क्लोरोफिल विटामिनों तथा लवणों की कमी को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पेट की सफाई के लिए हरे पत्तेदार सागों की आवश्यकता होती है। हरा साग खाने से दिल के दौरे, रक्त-परिसंचरण संबधी रोगों और यहां कि जानलेवा रोग कैंसर से भी बचा जा सकता है।

मेथी साग में लौह तत्व भरपूर होते हैं इसलिए यह रक्ताभाव होने पर बहुत लाभकारी होता है। इसके पत्तों को निचोड़कर, रस निकालकर उसमें बराबर मात्रा में शहद मिलाकर सेवन करने से यकृत, पीलिया एवं पित्ताशय के रोगों में लाभ होता है। इसके रस में मधुमेह की प्रारंभिक अवस्था को दूर करने की क्षमता होती है।

चोट लगने पर मेथी के पत्तों की पोटली बांधने या पट्टी लगाने से चोट की सूजन मिटती है। शरीर के जले हुए स्थान पर इसके पत्ते को पीसकर लगाने से जलन मिटती है तथा शरीर का दाह कम होता है। घी के साथ भुने हुए पत्ते खाने से अतिसार अर्थात पतले दस्त का होते रहना दूर होता है।

मेथी एक प्राकृतिक शैम्पू के रूप में भी गुणकारी हैं। स्नान से पहले इसकी पत्तियों को पीसकर सिर के बालों में लगाते रहने से बालों की रूसी खत्म होती है तथा बाल काले व मुलायम हो जाते हैं। इसकी पिसी हुई पत्तियों का लेप लगाने से चेहरे के मुंहासे व कालापन तथा चेहरे की झाइयां दूर हो जाती हैं। नैत्र विकारों खासकर आंखों की जलन, प्रदाह तथा आंखों से अत्यधिक पानी आने पर इसकी पत्तियों का रस आंखों में डालने से अत्यंत लाभ होता है।

मेथी में मछली के तेल का तत्व 'ट्रिगोथिन' पाया जाता है इसलिए शाकाहारियों के लिए यह एक अच्छा आहार माना जाता है। मछली के तेल से दूर होने वाले सभी रोग यथा स्नायु रोग, सूखा रोग, बहुमूत्र आदि में मेथी का साग अत्यन्त लाभदायक होता है।

बथुआ साग पेट के विकारों, खासकर आमाशय और यकृत के लिए अत्यंत गुणकारी होता है। इसमें लौह तत्व, पारा, सोना और क्षार की पर्याप्त मात्रा होती है। इसमें कृमिनाशक, नेत्रदोष नाशक, शूलनाशक, मल-मूत्रशोधक, स्वर को सुधारने तथा समस्त रोगों को शांत करने की शक्ति होती है।

फास्फोरस, पोटेशियम, तथा विटामिन-बी -12 पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। इसके उपयोग से यकृत, तिल्ली, गठिया, बवासीर व पथरी ठीक हो जाती है। सफेद दाग, दाद, खाज, फोड़ा, फुन्सी में इसका रस पीना या लेप करना लाभप्रत होता है। मूत्राशय गुर्दा एवं मूत्र-संबंधी रोगों में भी
बथुआ के साग का रस गुणकारी होता है।

चौलाई साग कुपोषण, खून की कमी, पीलिया तथा यकृत प्रदाह के लिए यह साग अत्यंत गुणकारी है। चौलाई के एक कप ताजा रस में दो कप दूध या आधा किलो सेब या पांच अंडों के समान गुण होते हैं। इस साग में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा, कैल्शियम, पोटेशियम, मैग्नीशियम, लोहा, सोडियम सहित विटामिन-ए, विटामिन-बी तथा बी-2 प्रचुर मात्रा में होता है।

चौलाई में दाह एवं शोध को दूर करने की शक्ति होती है। इसका रस गठिया, ब्लडप्रेशर और हृदय रोगों के लिए गुणकारी होता है। ऐसा माना जाता है कि इसके नियमित उपयोग से पथरी गल जाती है तथा शरीर को त्रस्त करने वाले कफ व बवासीर में आराम मिलता है। गर्भकाल में नियमित रूप से इसका रस शहद तथा थोड़ी सी इलायची के चूर्ण के साथ लेते रहने से अलग से आयरन तथा कैल्शियम की गोलियां नहीं लेनी पड़ती हैं। मासिक धर्म की गड़बड़ी भी इससे दूर होती है। यह हृदय एवं स्नायु संस्थान को भी सशक्त बनाता है।

पालक साग सभी तरह के शारीरिक विषों का नाश करने वाला होता है। खून की कमी को दूर करने का यह सस्ता साधन है। गर्भावस्था में नियमित रूप से पालक का व्यवहार करने से शरीर में लोहे तथा कैल्शियम की कमी दूर होती है। इसके सेवन से नेत्र ज्योति बढ़ती है तथा मंदाग्नि, अजीर्ण, उदरशूल तथा अरुचि दूर करने में भी इसका रस सहायक होता है। इसके रस में प्याज व पुदीना का रस मिलाकर लेने से उल्टी बंद होती है।

-योगी अरूण तिवारी

जैसी करनी वैसी भरनी

एक बुढ़िया अत्यंत कंजूस थी। उसके यहां एक संन्यासी भिक्षार्थी रोज आता। बुढ़िया एक चुटकी आटा भी उसे नहीं देती। संन्यासी फिर भी आता रहता।

बुढ़िया ने तंग आकर सोचा, अब इस बाबे का तो नाम ही मिटाना होगा। यह सोचकर उसने चार जहर-मिश्रित लड्डू तैयार किये और बाबे को भिक्षा में दे दिये।

संन्यासी ने साश्चर्यभाव से लड्डू लिए और फिर खालूंगा इसी भावना से ले जाकर रख दिये।

रात के समय बुढ़िया के चार पुत्र विदेश यात्रा से लौटे। रात्रि अधिक व्यतीत हो जाने से उन्होंने घर न जाकर संन्यासी की कुटिया में ही रहने का निर्णय लिया।

चारों भूखे थे। उन्होंने संन्यासी से खाना मांगा। संन्यासी ने बहुत प्रसन्नता से चारों लड्डू उन्हें दे दिये।

चारों खाकर सो गये, परंतु सोकर वे उठे ही नहीं। संन्यासी ने चारों के विषय में पूरी-पूरी जानकारी करके सोचा, कि जो जैसा करता है उसे कर्मानुसार वैसा ही फल मिलता है।

मासिक राशि भविष्यफल फरवरी 2015

○ डॉ. एन. पी. मित्तल, पलवल

मेष– मेष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अवरोधों के चलते आय देने वाला है। किन्तु व्यय भी विशेष रूप से होगा। जिससे मानसिक चिन्ता बनी रहेगी। माह के उत्तरार्ध में व्ययाधिक्य होने की संभावना है। छोटी बड़ी यात्राएं होंगी जिनसे अधिक लाभ की आशा नहीं की जा सकती। शत्रु सिर उठाएंगे किन्तु नुकसान नहीं पहुंचा पाएंगे। अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। समाज में मान सम्मान बना रहेगा।

वृष– वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह संघर्ष पूर्ण हालातों के चलते लाभ देने वाला है। माह का उत्तरार्ध, पूर्वार्ध की अपेक्षा अधिक सुदृढ़ स्थिति लिये हुए है। इस समय भी परिश्रम की अत्यधिक आवश्यकता रहेगी। अपने गुस्से पर काबू रखें अन्यथा कोई अनहोनी घटनाघट सकती है। यात्राओं में सावधानी बरतें। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

मिथुन– मिथुन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह मिश्रित फल देने वाला है। हां कार्य संबंधी नई योजनाएं बन सकती हैं। अपने स्वभाव में उग्रता न आने दें अन्यथा परिवार में सामन्जस्य बनाना मुश्किल हो जाएगा। कुछ बड़े लोगों से मुलाकात आप के काम आयेगी। आप अपने भूमि भवन का विक्रय किसी दबाव में आकर न करें।

कर्क– कर्क राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वार्ध में उत्तरार्ध की अपेक्षा कम अच्छा है। अपने बिना सोचे विचारे किए गये कार्यों के कारण अपमान सहना पड़ सकता है। परिवार में सामन्जस्य बिठाना एक टेढ़ी खीर होगी। अपनी वाणी पर काबू रखना होगा। अपने स्वास्थ्य के प्रति विशेष रूप से सचेत रहें।

सिंह– सिंह राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह संघर्ष तथा अवरोधों के चलते निर्वाह योग्य धन दिलाने वाला है। अच्छा होगा कि आवश्यक निर्णयों में अपने जीवन साथी से विचार किया जाए। ऋण के लेन-देन में सतर्कता बरतें। नौकरी पेशा जातकों के लिये इस माह का उत्तरार्ध अच्छा है।

कन्या– कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह आय कम और व्यय अधिक कराने वाला है। यदि किसी का कार्य साझेदारी का है, उसमें कुछ अधिक लाभ की उम्मीद की जा सकती है। अपनी माता के स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। जो कन्या राशि के जातक अभी तक अविवाहित हैं, उनके विवाह का प्रस्ताव आ सकता है।

तुला– तुला राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से अवरोधों के चलते धन लाभ के मार्ग प्रशस्त करेगा किन्तु संघर्ष अधिक करना पड़ेगा। कुछ जातकों को आकस्मिक धन की प्राप्ति हो सकती है। कुछ जातकों के घर में कोई मांगलिक कार्य संभावित है। अपने माता-पिता के स्वास्थ्य का विशेष तौर पर ध्यान रखें। परिवारजनों में सामन्जस्य बनाए रखना होगा।

वृश्चिक– वृश्चिक राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से कुल मिलाकर शुभ फल दायक है। शत्रु सिर उठाएंगे, परंतु आपसे पराजित ही होंगे। वे अपने मनसूबे पूरे करने में नाकामयाब होंगे। कुछ जातक कोर्ट-कचहरी में लटके हुए केसों को सुलझाने में सफलता प्राप्त करेंगे। जीवन साथी से संबंधों में मधुरता बनी रहेगी पर उसके स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। समाज में मान-सम्मान बना रहेगा।

धनु– धनु राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से पूर्वार्ध की अपेक्षा उत्तरार्ध अच्छा रहेगा। पूर्वार्ध में रूके हुए कार्य पूरा होने की आशा बंधेगी तो उत्तरार्ध में वे कार्य पूरे होंगे। भूमि-भवन के क्रय विक्रय में लाभ की आशा की जा सकती है। छोटी बड़ी यात्राएं होंगी जिनसे वांछित फल मिलेगा। जीवनसाथी के स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। यदि कोई आपसी समस्या हो तो थोड़ा नरमी बरतते हुए समय निकालें।

मकर– मकर राशि के जातकों के लिये इस माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। पूर्वार्ध की अपेक्षा उत्तरार्ध अधिक शुभ फल दायक है। भूमि भवन के क्रय विक्रय का प्रसंग आ सकता है जिससे लाभ की आशा है। सवारी के क्रय विक्रय का भी योग है। इन सभी प्रसंगों में तथा परिवार में सामन्जस्य बिठाने में वाणी पर नियन्त्रण अपेक्षित रहेगा। नौकरी पेशा जातकों को अनायास कुछ मिलने वाला नहीं है, उसके लिये प्रयास करना होगा।

कुंभ– कुंभ राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अधिक दौड़ धूप करके घनागम कराने वाला है। साझेदारी में कार्य करने वालों के लिये यह माह अपेक्षाकृत शुभ फल दायक है। कुछ जातक सवारी आदि से लाभ अर्जित करेंगे। दाम्पत्य जीवन में सामन्जस्य बना रहेगा। समाज में मान इज्जत बनी रहेगी।

मीन– मीन राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति कराने वाला है। पूर्वार्ध की अपेक्षा उत्तरार्ध अपेक्षाकृत शुभफल दायक है। कुछ जातक किसी घरेलू ठाठबाट के लिए वस्तुओं की खरीदारी करेंगे। किसी न किसी रूप में इस माह इन जातकों का व्ययाधिक्य भी होगा। इन जातकों को वात व्याधि आदि कष्टों का सामना करना पड़ सकता है, सचेत रहें।

-इति शुभम्!

फरवरी के पहले सप्ताह में पूज्यवर की चेन्नई यात्रा

Hindu Spiritual and Service Foundation के विशेष आमंत्रण पर पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी का 2-4 फरवरी का तीन दिवसीय प्रवास चेन्नई महानगर में होगा। इसी संस्था द्वारा आयोजित दस दिवसीय Spiritual and Service Fair के उद्घाटन-समारोह को आप संबोधित करेंगे। इस आयोजन में सेंकडों स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा अपने-अपने शिक्षा-सेवा-कार्यों की प्रदर्शनियां विशेष आकर्षण का विषय रहेगी। उद्घाटन-समारोह में पूज्य गुरूदेव के अलावा कांची कामकोटि के जगद्गुरू शंकराचार्य स्वामी जयेन्द्र सरस्वती आदि अनेक धर्म-जगत की विभूतियों की सहभागिता रहेंगी।

जैन आश्रम, मानव मंदिर केन्द्र, नई दिल्ली में पूज्य गुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्रजी तथा पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी के मार्ग-दर्शन में शिक्षा-सेवा की सभी प्रवृत्तियां प्रगति पर अग्रसर हैं। परीक्षाएं सामने हैं। गुरूकुल के सभी बच्चे उसकी तैयारी में लगे हैं।

गुरुकुल के छात्रों की मथुरा वृंदावन यात्रा

शीतकालीन अवकाश के दौरान गुरूकुल के बच्चों की पढ़ाई की विशेष व्यवस्था की गई। बच्चों ने प्रतिदिन 8 से 10 घंटे की पढाई की। बच्चों के बहुत अच्छे प्रयास को देखते हुए पूज्यगुरूदेव ने 1 दिवसीय यात्रा का तोहफा बच्चों को दिया। बच्चे बुधवार को प्रातः 6 बजे साध्वी समताश्री जी के नेतृत्व में मानव मंदिर गुरूकुल की बस में सवार होकर सर्व प्रथम मथुरा रोड़ पर स्थित वात्सल्य ग्राम में पहुंचे। वात्सल्यग्राम पूज्या साध्वी ऋतम्भरा जी के आशीर्वाद से बच्चों के लिए बहुत ही सराहनीय काम कर रहा है। वहां की व्यवस्था वहां के कार्य वहां की स्वच्छता अनुकरणीय है। वहां पहुंचते ही साध्वी स्वरूपा जी ने स्वागत किया। बच्चों के जलपान की व्यवस्था की तथा वात्सल्य ग्राम के बारे में जानकारी दी। साध्वी ऋतम्भरा जी की अनुपस्थिति में भी सारी व्यवस्थाएं बहुत अच्छी थीं। तत्पश्चात् वहां से प्रस्थान कर वृंदावन में श्री बांके बिहार जी तथा श्री रंगनाथ मंदिर के दर्शन कर श्री कृष्ण जन्मभूमि मथुरा के लिए रवाना हो गये।

मथुरा में श्री कृष्ण जन्मभूमि परिसर की स्वच्छता व व्यवस्था तो गजब की थी। वहां के भव्य दर्शन व गुफा में दर्शाया गया श्री कृष्ण जीवन चरित्र बच्चों को बहुत ही मनभाया। सायं 5 बजे जैन धर्म के इस युग के अतिम केवली भगवान जम्बूस्वामी की निर्वाणभूमि मथुरा में दर्शन का लाभ लिया। मंदिर का शांत वातावरण मनमोहक भव्य प्रतिमायें अद्भुत थी। बच्चों ने साध्वी श्री के साथ मंत्रपाठ के साथ दर्शनों का लाभ लिया।

और वहां से रवाना होकर पुनः मानव मंदिर में आ गये।

उवसग्गहरं स्तोत्र का पाठ

16 दिसम्बर को भगवान पार्श्वनाथ के जन्मदिन पर पूज्य गुरूदेव की प्रेरणा तथा आशीर्वाद से मानव मंदिर में उपसर्ग हर स्तोत्र का पाठ किया गया। 27 दिन तक लगातार 27 जन सायंकालीन 108 वार बीजमंत्र के जाप तथा 27 बार उपसर्ग हर स्तोत्र का जाप किया गया। पार्श्वनाथ भगवान का यह स्तोत्र आज के युग में भी अद्भुत और चमत्कारी है। बिना विघ्नबाधा के यह अनुष्ठान सम्पन्न हुआ। साध्वीश्री कनकलता जी, साध्वीश्री चांद कुमारीजी, साध्वी दीपाजी, साध्वी समताश्री, साध्वी बसुमति तथा साध्वी पद्मश्री जी के साथ बच्चों ने मिलकर इस अनुष्ठान को सफलता पूर्वक पूर्ण किया।

हंस-स्वभावी थे श्री रेंवतमलजी छाजेड़

वरिष्ठ श्रावक श्री रेंवतमलजी छाजेड़ की स्मृति में परिवार-जनों को दिये संदेश में पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी ने कहा- श्री छाजेड़ जी का स्वभाव हंस जैसा था। जैसे हंस जहां कहीं मोती मिलता है, चुग लेता है। उसकी नजर केवल मोती पर होती है। वैसे ही श्री छाजेड़ जी की नजर गुण-ग्राही थी। जहां से गुण मिले, उसे निर्भयता से स्वीकार कर लेना, उनके स्वभाव में था। सम्यक्त्व का एक लक्षण गुण-ग्राही दृष्टि का होना है। गुण से ऊपर संप्रदाय को महत्त्व देना संप्रदाय-दृष्टि हो सकती है, सम्यग् दृष्टि नहीं। मैं समझता हूं श्री छाजेड़जी की यह हंस-दृष्टि पूरे समाज के लिए मननीय है। उनका साफ-सुथरा चिंतन और साफ-सुथरा जीवन सबके लिए अनुकरणीय है।

पूज्य गुरूदेव ने कहा- वे पूरी श्रद्धा-सद्भावना से हमारे साथ जुड़े हुए थे। दिल्ली आकर दर्शन तथा भजन/कवितायें सुनने की प्रबल इच्छा उनके मन में थी। किंतु अस्वस्थता-वश ऐसा संभव नहीं हो पाया। इन प्रसंग पर परिवार-जनों के लिए यही प्रेरणा है आपके जीवन में हंस-दृष्टि/आत्म-दृष्टि का जागरण हो। जहां भी मोती मिलें, उनसे अपनी झोली भर लें। उनकी यशस्वी विरासत को आगे बढाएं।

दिवंगत आत्मा श्री रेंवतमलजी छाजेड़ के लिए बंधन-मुक्ति की मंगल कामना।

-मथुरा स्थित श्री जैन मंदिर (अंतिम केवली भगवान जम्बू स्वामी की निर्वाण भूमि) में मानव मंदिर गुरूकुल के छात्र समूह का एक दृश्य।

-अंतिम केवली भगवान जम्बूस्वामी की निर्वाण भूमि मथुरा में स्थित जैन मंदिर में भगवान की विशाल प्रतिमा के दर्शन का आनन्द प्राप्त करते हुए मानव मंदिर गुरूकुल के छात्र।

-श्री कृष्ण जन्मभूमि मथुरा में साध्वी समताश्री जी मानव मंदिर गुरूकुल के छात्रों एवं कार्यकर्ताओं का एक समूह।

-वृन्दावन स्थित वात्सल्य ग्राम आश्रम में मानव मंदिर गुरूकुल का छात्र समूह एवं साध्वी समताश्री जी प्रसन्न मुद्रा में।